चल मेरे पिट्ठू दुनिया देखें

कमल जोशी

चल मेरे पिट्ठू दुनिया देखें

कमल जोशी

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जुलाई, 2024

© कमल जोशी

एक अंतहीन घुमक्कड़

कमल जोशी का नाम आते ही हर किसी के चेहरे पर एक मुस्कान का आ जाना लाज़िमी है। वह था ही ऐसा ! एक अंतहीन घुमक्कड़ जैसा उसका जीवन, दुनिया के सबसे सुन्दरतम लोगों, सुन्दरतम दृश्यों को सहेजने के लिए हर वक्त तत्पर उसका कैमरा, देश-दुनिया में फैले हुए उसके दोस्त, बात-बात पर उसके ठहाकों के साथ

उसकी मोहिल बातें। उसकी अंतहीन बातों में एक निश्छल उत्साह हर वक्त मौजूद रहता था चाहे वह कितनी ही विषम परिस्थितियों से दो-चार क्यों न चल रहा हो।

कमल ने अनेक यात्राएं कीं, कुछ समूहों में तो कुछ अकेले। कुछ पैदल तो कुछ मोटरसाइकिल या अन्य सवारियों की मदद से। उसे बहुत छोटी उम्र में दमे की नामुराद बीमारी लग गयी थी। जिससे आजिज़ आकर तंग होने के बजाय उसने उसे अपनी हर यात्रा का साथी बना लिया था। अपने कैमरे से बस थोड़ा सा ही ज़्यादा ख़याल उस बीमारी का रखा जाना होता था। उसी के हिसाब से खानपान और बाक़ी चीज़ों का परहेज़। इस पृष्ठभूमि में उसके यात्रावृत्तों को एक साथ पढ़िए तो आपको हैरत होती है कि उसके भीतर कैसी अदम्य इच्छाशक्ति रही होगी, जिसके बूते पर उसने अपनी घुमक्कड़ी के माध्यम से अपने उत्तराखण्ड, अपने देश समाज और अपने जन से ऐसी अन्तरंग पहचान बनाई।

पिथौरागढ़ जनपद की सीमान्त रङ घाटियों में एक कहावत मशहूर है "कटुभाषी को अपना राशन अपनी पीठ पर लाद कर ले जाना होता है।" इन घाटियों में एक गाँव से दूसरे गाँव की दूरी दस बारह किलोमीटर से कम नहीं होती। रास्ते में दुकानें वग़ैरह कहीं नहीं होतीं। ऐसे इलाकों में यात्रा करने का अर्थ हुआ कि आप अपने रहने, खाने के लिए दूसरे गाँव के बाशिंदों की दया, मेहरबानी पर निर्भर रहते हैं। अगर आपके पास मीठी बोली और अजनबियों से घुल, रल जाने की कला न हो तो आपको भूखा

सोना पड़ सकता है। हो सकता है कमल ने यह कहावत कभी न सुनी हो लेकिन उस के भीतर ये दोनों ख़ूबियाँ भरपूर थीं, जिसकी अनेक झलकियाँ इन पन्नों को पलटते हुए आपको दिख जाती हैं।

ऐसी ही एक यात्रा में जब उसे प्यास लगती है तो बीहड़ में बनाई छानी में रह रही चरवाहों की बेटी मीना और उसकी दोस्त सावित्री उसके लिए चाय और रोटियाँ बना देती हैं। दो वक्त चावल खाने वाले भरड़ कांडे गाँव के बाशिदों घरों में गेहूँ नहीं होते लेकिन कमल के स्वास्थ्य संबंधी परहेज़ के बारे में जैसे ही उन्हें पता चलता है, वे उसके लिए दूर कहीं से बीज के लिए रखे गए गेहूँ के दानों का इंतज़ाम करते हैं और उन्हें पीसकर कमल के लिए रोटी बनाते हैं, उसे ताज़ा शहद पेश करते हैं। मुन्दोली गाँव की अनुष्का, रामचंद्र, बहत्तर परसेंट नंबर लाने वाली नीमा राठौर, सरजू, अनुसूया, पोलियो वाला गबरू, घसियारिनें, अन्नपूर्णा टिकुली, द्वितीय विश्वयुद्ध में लड़ चुके एक बूढ़े फ़ौजी, छानियों में रहने वाले चरवाहे, स्कूलों के मास्टर, हेडमास्टर, चौकियों पर तैनात सैन्य- अर्धसैन्य बलों के सिपाही, हल्द्वानी में पली बढ़ी गाँव की बहू, जिसे घास काटना नहीं आता और ऐसे ही न जाने कितने ही मीठे, भोले भाले जन कमल की यात्रा के हिस्से बन उसके और उसके साथियों को जितनी संभव हो उतनी सहायता करने को तत्पर पाए जाते हैं।

अजनबियों से इस तरह के नेह के बंधन बना लेना कमल के स्वभाव की ऐसी विशेषता थी जो उसे एक दफ़ा मिला, उसी का हो कर रह गया। यात्राएं भी कैसी-कैसी! कभी बिन्दाकोटी से लामारी की 4444 सीढ़ियां उतर रहा हैं, कभी बूढ़ा केदार, सहस्त्रताल, महासरताल, बेलक, कलुवा विनायक जैसी दुर्गम जगहों की तरफ़ जा रहा है, कभी 19000 फ़ीट ऊँचे सिन-ला दर्रे और आदि कैलाश की चढ़ाई चढ़ रहा है। कभी त्रिजुगी नारायण से घुत्तू जा रहा हैं, तो कभी 1200 किलोमीटर लम्बी अस्कोट-आराकोट यात्रा में सबसे आगे-आगे पाया जा रहा हैं।

आदमी बिना किसी काम के यात्राएं क्यों करता है ? अगर वह आदमी फ़ोटोग्राफ़र भी हुआ तो ये प्रश्न तब और भी जायज़ हो जाता है ? प्रकृति के अनुपम दृश्यों को देखने के लिए ? हिमालय की चोटियों पर स्वर्णिम सूर्यास्त को अपने कैमरे में क़ैद करने के लिए? या ऐसे ही मज़े के लिए? कमल जोशी के यात्रावृत्तों में इन सवालों के बहुत बारीक उत्तर मिल जाएंगे.

आप यात्रा इस लिए करते हैं कि आप अपनी दुनिया को जितना संभव हो देख, समझ पाएं। कमल के अन्तरंग रहे और हमारे समय के सबसे सचेत कवियों में से एक वीरेन डंगवाल अपनी कविता 'हमारा समाज' में कहते भी हैं:

''जितना संभव हो देख सकें, इस धरती को

हो सके जहाँ तक, उतनी दुनिया घूम आएं।

यह कौन नहीं चाहेगा''

पीठ पर भारी पिट्ठू, रास्तों में पैरों में चिपक जाने वाली जोंकों, दुर्गम रास्तों, तम्बुओं में रहने, पानी की किल्लत, खाने की अनियमितता, असुविधा, घोड़े, खच्चर, कुली, नेपाली कामगारों की संगत और दिल में कभी शांत न होने वाली उत्सुकता को अपने हरबे-हथियार बना कर कमल जोशी अपने समाज, अपनी दुनिया, अपनी धरती को इतने नज़दीक से देखना चाहता था, जैसे सिर्फ़ वही देख सकता था। मौसम साफ़ हो या ख़राब, हिमालय दिखे या नहीं, धरती की घास हरी हो या भूरी, कमल को हर जगह लोग चाहिए होते थे । लोग जिनसे वह बातें कर सके, उनके जीवन की जटिलताओं, परेशानियों को समझ सके। उसे बूढ़ी माताओं से बात करने में आनंद आता था जिनसे वह पुरानी लोकगाथाओं, क़िस्सों के अपने भण्डार को समृद्ध करता चलता था। उसे मिट्टी, पत्थर के पुराने घर चाहिए होते थे, जिनकी दीवारों के बीच सांस लेने वाले जीवन की हर छोटी बड़ी बात को वह आत्मसात कर लेना चाहता था ताकि वह भीतर से विशाल बन सके हिमालय जितना विशाल और सब कुछ अपने भीतर समेट लेने वाला !

बेलक की अपनी यात्रा के संस्मरण को कोई चार दर्जन पन्नों में समेटने के बाद कमल उसका अंत यूं करता है:

बेलक में हम कुछ देख नहीं पाए। "बेलक न देख पाने के बावजूद हमने कितना देखा, कितना सीखा है ना।" रेहा ने कहा। मैंने रेहा को घूरा, उसकी आँखों में पुन: जहाँ से हम आये थे, उसी दुनिया में जाने के साथ ऐसी ही दूसरी यात्रा के लिये आमंत्रण था।

इस तरह कमल के यात्रावृत्त और संस्मरण किसी एक जगह एक पड़ाव या व्यक्ति की कथा नहीं, उनके परिवेश को अपनी सम्पूर्णता में पकड़ने की ईमानदार कोशिशें हैं। इस परिवेश को बेहद आधुनिक निगाह से देखने का सलीक़ा भी उसके पास है, जिसकी मदद से वह बदलती संस्कृति, पर्यावरण चेतना, विकास की अवधारणा, शिक्षा व्यवस्था की ख़ामियां और ख़ास तौर पर बच्चों, औरतों के ज़रूरी सरोकारों को लेकर अपने जीवन के लिए एक ठोस बौद्धिक ज़मीन तैयार कर सकने में सफ़ल हुआ।

तेरह साल की उम्र में दमे का शिकार हो जाने के बावजूद इतनी सारी यात्राओं को कर लेने वाले इस आदमी के रास्ते में बहुत सारी दिक़्क़तें आई होंगी लेकिन वो उन्हें बहुत अधिक तूल नहीं देता। मिसाल के लिए कलुवा विनायक की तीखी चढ़ाई

अकेले चढ़ते हुए दो बार उसका सामना प्रत्यक्ष मृत्यु से होता है। कुछ ही मिनटों बाद में जब वह अपने साथियों से जा मिलता है तो उसके फक्क चेहरे को देख कर दोस्त उससे पूछते हैं ''क्या हुआ ?'' वह मुस्करा कर जवाब देता है कि उसका चेहरा ठण्ड की वजह से वैसा दिख रहा है।

यही हिम्मत और बिना शिकवा, शिकायत किये आगे चलते जाना कमल जोशी की विरासत है। जिससे आने वाली युवा पीढ़ियां जीवन के अनेक सबक सीख सकती हैं।

अशोक पाण्डे

अनुक्रम

कृष्ण कमल के पैदल पाँव

हम होंगे सिनला पास	12
बोर बलड़ा-भरड़ काण्डे	114
बस एक मोबाइल टॉवर	142
एक रात का परिवार	150
दर्शन दे गयी नंदा	159
आस्था की यात्रा	171
अनसुया देवी	180
रे महासर रै सिंग को पेंसन दिलाओ	196
बेलक : देरवा बहुत	242
कलुवा विनायक का एक किलोमीटर	286
आज़ादी के असल सैनानी	300
उत्तराखण्ड का मिनी लेह	311

चल मेरे पिट्ठू

छेबुली का हाइवे	324
मौखम्बा की रंगीली	333

टिकुली अन्नपूर्णा 345

उड़ना चाहती है नीमा 354

गबरू की चाहत 363

हम पिलायेंगे चाय 368

ये पहाड़ी ! अपने भाई 379

देवता भी बसते हैं देवभूमि में 387

दुनिया देखें

टिचरी माई: लौट आओ 396

सफ़र में है नाहिद 406

इक़रा ! कुरान का पहला अक्षर 443

हमारे अपने स्टार्ट-अप 451

पहाड़ी नहीं: पहाड़ के लिए संवेदना 461

पहाड़ के ये पुरुष 469

ग्राम्य आतिथ्य और रोज़गार 475

संस्कृति ! विकास की साथी 483

जौनसार की मायावी दीवाली 493

कृष्ण कमल के पैदल पाँव